2 (a) इंडियन एसोसिएशन

स्थापना - 1876, कलकत्ता

संस्थापक => सुरेन्द्रनाथ बनर्जी + आनंदमोहन बोस
- क्षेत्रीय स्तर पर राजनैतिक गतिविधियों का संचालन

(b) चार्ल्स मेटकाफ

- भारत का ब्रिटिश गवर्नर जनरल
- कार्यकाल - 1835 - 1836
- कार्य - भारतीय प्रेस से प्रतिबंधों को हटाया अतः इसे "भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता"

(c) महादेव देसाई

- यह एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे
- महात्मा गांधी के सचिव
- इन्होंने चंपारण, बारदोली, नमक सत्याग्रह में भाग

(d) नानाजी कुनहा

(e) एनफील्ड रायफल

(i) संबंध 1857 की क्रांति से है
(ii) का संबंध => ब्रिटिश सरकार द्वारा एनफील्ड रायफल का प्रयोग जिसमें यह अफवाह फैली कि

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

- इनके वास्तुओं का निर्माण कुतुब व नायकी पश्चिमी से हुई यह क्रांति का तात्कालिक कारण बना।

(4) मलिक काफूर :-)

- संबंध - खिलजी वंश से है
- अलाउद्दीन खिलजी का गुलाम जिसे गुजरात अभियान के दौरान प्राप्त किया
- दक्षिण विजय इसी के नेतृत्व में की गई
- 'हजारी दीनारी' कहा जाता

(5) घाघरा का युद्ध

- कब हुआ - 1529
- ~~किसके बीच~~
  कहाँ - घाघरा (बिहार)
- किसके बीच - बाबर व अफगानों के बीच
- परिणाम - बाबर विजय हुआ
- विशेषता - पहली बार धरती व पानी पर लड़ा युद्ध

(11) नाजी पार्टी

- का संबंध जर्मनी से है
- 1920 में हिटलर के नेतृत्व में इसकी स्थापना
-

(I) तालीकोटा का युद्ध

- कब हुआ - 23 जनवरी 1565 को हुआ
- किसके बीच - विजयनगर (रामराय के नेतृत्व) + अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा व बीदर
- परिणाम - विजयनगर की हार व पतन का हम्पीस्थल

(J) जैन-उल-आबदीन

- 15वीं सदी में कश्मीर का शासक था
- धार्मिक सहिष्णुता के कारण (कश्मीर का अकबर)
- महाभारत व राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद

(K) आल्हा-ऊदल

- महोबा (म.प्र.) से संबंधित है
- चंदेल वंश के अंतिम शासक परमार्दिदेव के काल में सेनापति थे
- वीर योद्धा के रूप इनकी कहानियों का संकलन। आल्हा खंड

(L) सूर्य सेन

1) बंगाल के क्रांतिकारी नेता
- ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह के लिए चटगांव शस्त्रागार को 1930 में लूटा
- 1934 में फांसी की सजा

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

(M) बिल ऑफ राइट्स - 1689

⇒ 1688 की इंग्लैंड की गौरवपूर्ण क्रांति के बाद पारित हुआ
- संसद की सर्वोच्च सत्ता स्वीकार तथा राजा की निरंकुशता का समाप्त किया
- नागरिक अधिकारों स्थापित किया

(N) जार निकोलस द्वितीय

- रूस का अंतिम निरंकुश सम्राट
- भोग विलासी व प्रजा के मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं
- इसी के समय रूसी क्रांति प्रारंभ हुई थी

Scanned with CamScanner

(C) Q(b) भारत छोड़ो आंदो. के महत्व का उल्लेख करो ?

8 अगस्त 1942 को बम्बई के 'ग्वालिया टैंक' में 'मौलाना अबुल कलाम आजाद' के नेतृत्व में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन आंदो. का प्रस्ताव पारित।

भारत छोड़ो आंदो के महत्व के बारे बात करे तो निम्न महत्व है

आंदो. का महत्व

- व्यापक प्रसार
- जनता में आत्म विश्वास
- अंतर्राष्ट्रीय दबाव
- स्वाधीनता की मांग
- सत्ता हस्तांतरण

व्यापक प्रसार => गांव से लेकर शहर तक ब्रिटिश सरकार को चुनौती

जनता में आत्म-विश्वास => आत्म विश्वास में वृद्धि व समांतर सरकारों का गठन, सतारा व बलिया

अंतर्राष्ट्रीय दबाव => अमेरिका व चीन द्वारा ब्रिटिश सरकार पर दबाव की भारत के मामलों को सुलझाया

स्वाधीनता की मांग => जनता अब किसी भी राजनैतिक विकास से संतुष्ट नहीं केवल स्वाधीनता ही लक्ष्य

सत्ता हस्तांतरण => इस आंदो. के फलस्वरूप सत्ता हस्तांतरण की बातें की जाने लगी।

अतः इस आंदो. ने भारत को स्वतंत्रता की दहलीज पर लाकर खड़ा कर दिया अब बस अंग्रेजों को भारत छोड़ने की देर थी जो 15 अगस्त 1947 को पूरी हुई।

Scanned with CamScanner

1857 की क्रांति के सैनिक कारणों पर प्रकाश डालो?

Q 2(c) 29 मार्च 1857 को मंगल पांडे द्वारा चर्बी वाले कारतूस की मनाही व कामी से मेरठ की सैनिक टुकड़ी से विद्रोह की शुरुआत जिसका प्रसार बाद के अन्य क्षेत्रों में हुआ।

1857 की क्रांति के सैनिक कारणों को निम्न प्रकार देखा जाता

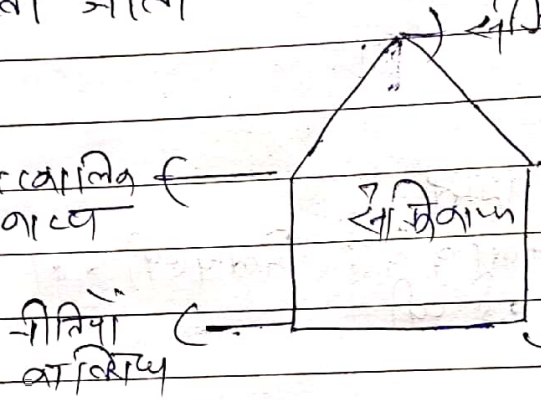

सैनिकों का उच्चपदों पर आसीन नहीं => सभी उच्च पदों पर ब्रिटिश लोग के अधिकार में थी।

भेदभाव पूर्ण - कम वेतन, अपमानजनक व्यवहार आदि रवैया अपनाते

समुद्र पार कूच => भारतीय सैनिक समुद्र पार जाना धर्म के विरुद्ध, वर्मा व अफगानिस्तान युद्ध

नीतियों का विरोध => सैनिक किसान पृष्ठभूमि से थे व कृषकों की दशा से भली भांति अवगत

तात्कालिक कारण => सैनिकों द्वारा गाय व सुअर के मांस से निर्मित कारतूस के उपयोग की

उपरोक्त कारणों को देखा जा सकता है जिसने 1857 क्रांति को उत्पन्न किया तथा जिसकी चिंगारी भारत अन्य क्षेत्रों में फैल रही।

प्र. चन्द्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियों पर प्रकाश डालिये?

उत्तर) चन्द्रगुप्त मौर्य चौथी सदी में मगध की गद्दी पर धनानंद को पराजित कर बैठा तथा मौर्य वंश की नींव डाली।

चन्द्रगुप्त की उपलब्धियों की जानकारी कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' व 'इंडिका' से प्राप्त की जा सकती है जो इस प्रकार है —

उपलब्धियाँ
- साम्राज्य विस्तार
- सेल्यूकस से युद्ध
- केंद्रीकृत प्रशासन की नींव
- अन्य कार्य

साम्राज्य विस्तार => उत्तर-पश्चिम भारत से लेकर पूर्व में बंगाल, पश्चिम में सौराष्ट्र व दक्कन तक फैला।

सेल्यूकस => सेल्यूकस को युद्ध में हराया व काबुल, कंधार व हिरात पर अधिकार

केंद्रीकृत प्रशासन की नींव => प्रशासन को सुदृढ़ किया जिससे सभी शक्तियाँ बाधित तथा इतने बड़े साम्राज्य को सुरक्षित

अन्य कार्य => सुदर्शन झील का निर्माण। जैन धर्म को आश्रय दिया अंतिम समय केवल उपवास कर 'श्रवणबेलगोला' प्राण त्यागे।

उपरोक्त उपलब्धियों के कारण वह एक महान शासक था व मगध के उत्कर्ष को बढ़ाया जिससे कालांतर में अशोक, गुप्त शासकों को मार्गदर्शन मिला।

① कुंवर चैन सिंह पर टिप्पणी लिखिए?

2(e) म.प्र. भी ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियों से अछूता नहीं था ब्रिटिशों विरोध में कुंवर चैन सिंह का संघर्ष भी सर्वप्रथम उल्लेखनीय है

कुंवर चैन सिंह के बारे में निम्न प्रकार से देख सकते

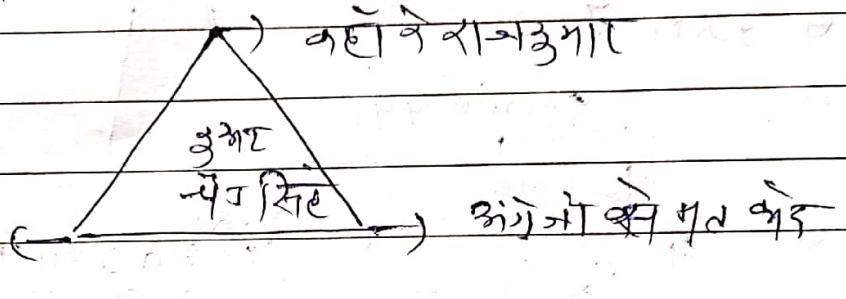

<u>वहाँ के राजकुमार</u> => म.प्र. के नरसिंहगढ़ रियासत के राजकुमार थे।

<u>अंग्रेजों से मतभेद</u> => ब्रिटिश सरकार का एजेण्ट <u>मैडाक</u> इस राज्य को अपने अधीन

- अफीम की खरीद केवल ब्रिटिश ही कर सकेंगे यही दो बिन्दु संघर्ष का कारण बने।

<u>मृत्यु</u> => ब्रिटिश एजेण्ट व कुंवर चैन सिंह के बीच संघर्ष तथा प्रथम चरण में मैडाक भाग गया

(i) द्वितीय चरण में <u>सीहोर</u> के चौराहे पर अंग्रेजों द्वारा हमले से कुंवर चैन सिंह की मृत्यु।

अतः कुंवर चैन सिंह ने शर्तों को मानने की बजाय संघर्ष को प्राथमिकता दी व म.प्र. के इतिहास में <u>प्रथम शहीद</u> होने वाले गौरव कहलाये।

Scanned with CamScanner

Q. म.प्र. के ताम्रपाषाण स्थलों का वर्णन करो ?

उत्तर) म.प्र. का अपना एक इतिहास रहा है जहाँ प्राचीन काल मध्यकाल व आधुनिक काल के साक्ष्य प्राप्त हुये है ताम्र पाषाण काल (2000 - 800 ई.पू.) तक काल माना जाता है

ताम्रपाषाण कालीन स्थलों को देखे तो म.प्र. मे कई स्थल दिखाई देते है

ताम्रपाषाणकालीन स्थल

कायथा — एरण — नावदाटोली — नागदा — अन्य

कायथा => उज्जैन मे स्थित है
- यहा के उत्खनन से तांबा धातु की कुल्हाड़िया, कंगन व चूड़ी प्राप्त हुई।

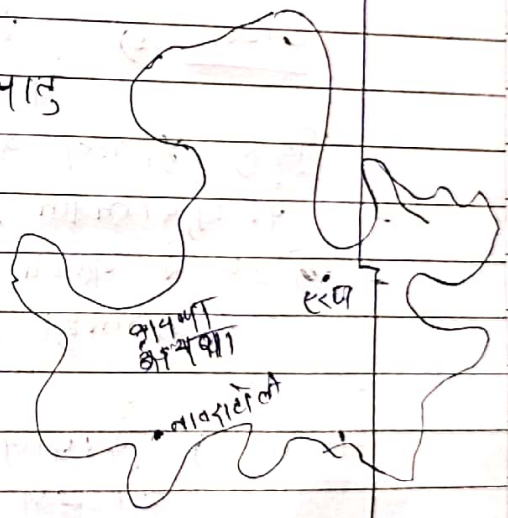

एरण => सागर जिले में स्थित
- तांबे की कुल्हाड़िया, मृदभांड, मिट्टी के पशु आकृति आदि

नावदाटोली => निमाड़ मे
- झोपड़ीनुमा घरो के साक्ष्य साथ ही छोटे परिवहन की गाड़ी, मृदभांड आदि

नागदा => उज्जैन मे स्थित
- मृदभांड, लघुपाषाण के औजार

अन्य => कवठा, डंगवाला आदि स्थल है

इस तरह म.प्र. मे ताम्रपाषाणकालीन स्थलो को देखा जा सकता है

Q. म.प्र. के झंडा सत्याग्रह का वर्णन करें?

2-(W)

म.प्र. की स्वतंत्रता आंदो. से अछूता नहीं रहा यहाँ भी कई आंदो. हुए जिसमें झण्डा सत्याग्रह का भी अपना एक उल्लेखनीय योगदान है।

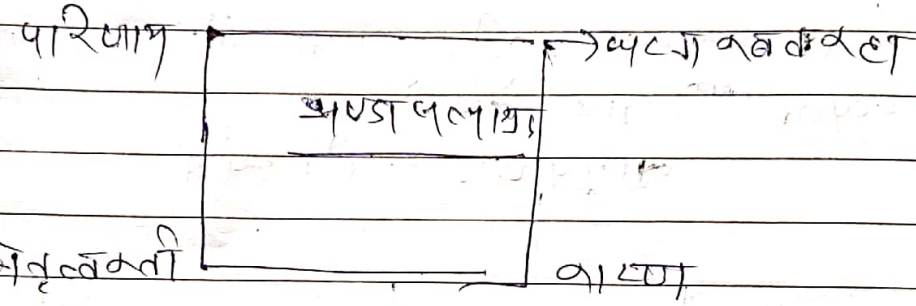

घटना एवं वर्ष => 1923 में जबलपुर नामक स्थल

कारण => असहयोग आंदोलनकारियों के स्वागत में जबलपुर नगरपालिका में झण्डा फहराया किंतु पुलिस कमिश्नर ने उतारकर पैर से कुचला

- पं. सुन्दरलाल, सुभद्राकुमारी चौहान, लक्ष्मण सिंह चौहान
- कांग्रेस ने महत्व को समझा आंदो. के लिए नागपुर व पुनः एवं जबलपुर पुनः झण्डा सत्याग्रह का आंदो.

नेतृत्व => देवदास गांधी, राजगोपालाचारी व डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने इस आंदो. का नेतृत्व

परिणाम - आंदो. का दमन किया व पं. सुन्दरलाल को 6 माह की सजा।

अतः इस आंदो. ने राष्ट्रीय आंदोलनकारियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया तथा अंतिम में अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी गतिविधियों को जारी रखा।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

(प्र.) भारत छोड़ो आंदो. में म.प्र. का योगदान पर प्रकाश डालिये ?

उ.(II)

ब्रिटिश सरकार के खिलाफ भारत छोड़ो आंदो. की शुरुआत 1942 से हुई वही म.प्र. भी की इस आंदो. में भाग लिया।

म.प्र. में भारत छोड़ो आंदो. के निम्न क्षेत्रो मे देखा जा सकता है -

- इसकी शुरुआत म.प्र. के ग्वालियर रियासत के विदिशा से हुई
- जबलपुर में गुलाब सिंह के नेतृत्व में आंदो. हुआ
- रीवा में विद्यार्थी युनियन के नेतृत्व में जुलूस पर पुलिस द्वारा गोली चलाई व लाल पद्मधर सिंह की मृत्यु
- मण्डला में उदयचंद जैन
- भोपाल में भी प्रजामंडल के गोविंदसिंह श्रीवास्तव, विट्ठल दास बजाज आदि को आंदो. के दौरान गिरफ्तार
- 'करो या मरो' के नारे से प्रेरित होकर मु-इलाहबाद में क्रांतिकारियों बंदियों ने जेल तोड़कर अंग्रेजो के विरुद्ध हमला

अतः म.प्र. में भारत छोड़ो आंदो. ने अंग्रेजो के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया की तथा यह सिद्ध किया की म.प्र. की राष्ट्रवादी भावना से ओतप्रोत व स्वतंत्रता के लिए तत्पर है।

Scanned with CamScanner

Q. हुमायूँ की असफलता के कारणों का वर्णन करें?

Ans) हुमायूँ 16वीं सदी में बाबर की मृत्यु के पश्चात मुगल साम्राज्य का अगला शासक बना एवं मुगल साम्राज्य को आगे बढ़ाया।

किंतु हुमायूँ लंबे समय तक शासन [illegible] बरकरार नहीं अधिक साम्राज्य विस्तार अतः वह एक शासक के रूप में असफल नजर आता जिसके पीछे के कारणों को निम्न प्रकार से देख सकते हैं

- शेरशाह की बढ़ती हुई शक्ति की उपेक्षा की चौसा व बिलग्राम के युद्ध में पराजय

- हुमायूँ ने राज्य का बंटवारा अपने भाइयों के बीच किया किंतु भाई इससे असंतुष्ट व असहयोग की प्रवृत्ति

- हुमायूँ की व्यक्तिगत कमियाँ जिनमें दृढ़संकल्प शक्ति, दूरदर्शिता, कार्यकुशलता तथा परिश्रम का अभाव

- हुमायूँ अफीमी व विलासिता प्रवृत्ति जिसका फायदा शेरशाह ने उठाया

- भाइयों में सर्वत्र सत्ता को लेकर मतभेद

अतः हुमायूँ उपरोक्त कारणों से योग्य होते हुए अपनी आदतों व नीतिगत कमी के कारण असफल सिद्ध हुआ व शेरशाह ने इसी का फायदा उठाकर सत्ता पर कब्जा

Page No.
Date

Q) फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों का योगदान

Ans) फ्रांस की क्रांति 1789 से बास्तील के किले पतन से प्रारंभ होती है जिसके कारणों में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक कारणों के अतिरिक्त दार्शनिकों की भूमिका भी उल्लेखनीय थी।

फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका को देखे तो निम्न दार्शनिक नजर आते

दार्शनिकों की भूमिका

- मॉन्टेस्क्यू
- वाल्टेयर
- रूसो
- अन्य

मॉन्टेस्क्यू => 'द स्प्रिट आफ लॉ' में राजा के दैवीय सिद्धांतों का खण्डन

- शक्ति के पृथक्करण का सिद्धांत दिया
- इंग्लैंड की सरकार को आदर्श

वाल्टेयर => 'एरिप लेटर्स' में चर्च के अत्याचारों, असहिष्णुता, अन्याय के बारे में लिखा

- इंग्लैण्ड के संवैधानिक राजतंत्र की तरह राज्य की स्थापना।

रूसो => 'सोशल कान्ट्रेक्ट' के माध्यम से मनुष्य की स्वतंत्रता की बात कही

- सामान्य इच्छा से राज्य का निर्माण

अन्य - दिदरो ने शासन की बुराईयों, चर्च की कट्टरता व हर क्षेत्र में व्याप्त असमानता को उजागर

इस तरह दार्शनिकों ने क्रांति के लिए प्रत्यक्ष रूप से तो नही किन्तु अपने विचारों व वैकल्पिक व्यवस्था के माध्यम से नई व्यवस्था के लिए फ्रांस की जनता को उद्वेलित किया।

Scanned with CamScanner

Q2 3(a) प्रथम विश्व युद्ध के कारणों का वर्णन करें?

A. प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) तक चला जिसने केवल यूरोप को बल्कि सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया तथा पूरे विश्व में अपार जन-धन की हानि को देखा जाता है यह विश्व युद्ध अचानक घटने वाली घटना नहीं थी बल्कि दीर्घकाल से चली आ रही राजनैतिक आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम थी एवं आस्ट्रिया के उत्तराधिकारी की मृत्यु ने इसमें एक चिंगारी का काम किया व आग सम्पूर्ण विश्व में भड़क गई।

प्रथम विश्व युद्ध के कारणों पर दृष्टिपात करें तो तत्कालिक विश्व में निम्न गतिविधियां हो रही थी जो इस प्रकार।

प्रथम विश्व युद्ध के कारण

- साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा
- कूटनीतिक संधियां
- सैन्यवाद
- उग्रराष्ट्रवाद
- बाल्कन की जटिलता
- तात्कालिक कारण

साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा ⇒ औद्योगिक क्रांति, वैज्ञानिक खोजों आदि ने साम्राज्यवाद का विस्तार किया
- ब्रिटेन, फ्रांस पहले से अपना साम्राज्य विस्तार कर चुके थे
- वहीं जर्मनी व इटली के एकीकरण के पश्चात उन्होंने भी साम्राज्य वाद की नीति को प्रमुखता दी
- अतः यूरोप में संघर्ष की स्थिति पैदा हो गई।

कूटनीतिक संधियां ⇒ कूटनीतिक संधियों को यूरोप को दो गुटों में विभाजित
- जर्मनी द्वारा फ्रांस का अलसास-लारेन छीनने के बाद इटली व आस्ट्रिया से संधि ताकि फ्रांस अकेला रह जाए।
- वहीं दूसरी ओर इंग्लैंड, फ्रांस व रूस द्वारा त्रिदेशीय मैत्री संघ

साथ वेसयल्ते-२ इन दोनों में कड़ुता और बढ़ गई।

संधिवाद => संधीकरण ग्रुप्त संधियों से जुड़ा हुआ था

- संधियों से अपने अविश्वास ने युद्ध की आशंका को बढ़ा दिया
तथा देश अपनी सैनिक शक्ति में वृद्धि करने लगे।
- सैनिक वृद्धि को राष्ट्रीय प्रतिष्ठा समझा जाता था।
- अतः हर समस्या का समाधान युद्ध में खोजा
जाने लगा।

उग्रराष्ट्रवाद => राष्ट्रवाद की विचारधारा के अंतर्गत, धर्म, भाषा, संस्कृति, क्षेत्र आदि के आधार पर राष्ट्रों का उदय
- फ्रांस जर्मनी की हार के बाद अपने आप राष्ट्रीय अपमानित
- बाल्कन क्षेत्र में स्लाव जाति को लेकर विवाद

बाल्कन क्षेत्र में जटिलता => इस समस्या ने दोनों गुटों को आमने-सामने ला दिया
- बाल्कन क्षेत्र में आस्ट्रिया सर्व आदि को दबाना वहीं सर्बिया में अधिकतर सर्व जाति के लोग रहते
- जहाँ आस्ट्रिया को जर्मनी का सहयोग व रूस स्लाव जाति का संरक्षक अतः वह सर्बिया के पक्ष में था

तात्कालिक कारणों => समाचार पत्र एक-दूसरे देश के प्रति ज़हर उगल रहे थे जिन्होंने
वातावरण तैयार
- अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव था जो इन समस्याओं आपसी सहमति से सुलझा सके।

तात्कालिक कारण => आस्ट्रिया के राजकुमार फ़र्डिनेंड की गोलियों की राजधानी सेराजेवो में हत्या कर दी गई।

ऑस्ट्रिया ने आरोप सर्बिया पर लगाया तथा सर्बिया पर आक्रमण की घोषणा

घोषणा के पश्चात सर्बिया की ओर रूस, इंग्लैण्ड, फ्रांस, एवं वहीं ऑस्ट्रिया की ओर से जर्मनी व इटली युद्ध में कूद पड़े।

उपरोक्त कारणों ने प्रथम विश्व युद्ध का रूप धारण कर लिया। इसमें 60 देशों ने भाग लिया। इस युद्ध के परिणामस्वरूप यूरोप के देशों का घमंड टूटा वहीं अमेरिका नई विश्व शक्ति के रूप में उभरा व देश में शांति व सुरक्षा के लिए राष्ट्र संघ की स्थापना को बल प्रदान किया। किंतु वहीं पेरिस शांति समझौते के तहत युद्ध की समाप्ति की घोषणा की। किंतु यह घोषणा लंबे समय तक नहीं चली व 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध का रूप ले लिया।

Q3(a) औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में ही क्यों हुई।

औद्योगिक क्रांति की शुरुआत 18वी सदी के उत्तरार्द्ध से मानी जाती है एवं इसकी शुरुआत इंग्लैण्ड में हुई औद्योगिक क्रांति अचानक होने वाली नही बल्कि सतत प्रक्रिया का परिणाम थी जहाँ हाथ से उत्पादन की जगह मशीनो की, लौह इस्पात का प्रयोग, कोयला, पेट्रोलियम के रूप ऊर्जा, कारखाना पद्धति का विकास, पूंजीवाद का उदय, आदि ने औद्योगिक क्रांति को गति प्रदान की व संपूर्ण विश्व की दशा व दिशा में परिवर्तन किया।

औद्योगिक क्रांति के इंग्लैण्ड में होने के कारणो को देखें तो इस प्रकार नजर आते

कारण इंग्लैण्ड में होने के कारण

- भौगोलिक स्थिति
- राजनीति व्यवस्था
- नौसैनिक शक्ति
- पूंजी व्यवस्था
- कृषि क्रांति
- वैज्ञानिक आदि

भौगोलिक स्थिति => चारो ओर समुद्र से घिरा।
(: बंदरगाहों का विकास हुआ
- आवागमन व परिवहन की सुविधा जिससे बाजारो तक की पहुँच सुनिश्चित

राजनीतिक व्यवस्था => 1688 रक्तहीन क्रांति संसदीय प्रजातंत्र मजबूत था
- इस व्यवस्था ने औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहित किया।

Page No.
Date

भौगोलिक आकृति ⇒ समुद्र से घिरा होने के कारण नौसैनिक शक्ति का विकास
- इस आकृति के बल विशाल औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित करने में सफल
- कच्चा माल प्राप्त करना आसान

पूँजी की उपलब्धता ⇒ औपनिवेशिक भारत व अमेरिका जैसे उपनिवेशों से अधिक पूँजी संग्रह की जिससे औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया।

कृषि क्रांति ⇒ इंग्लैण्ड में कृषि क्रांति हो चुकी थी
- किसानों को अधिक लाभ व अधिशेष पूँजी को उद्योगों के निर्माण में निवेश किया
- कृषि क्रांति में मशीनों के प्रयोग से बेरोजगारी बढ़ाई जिससे उद्योगों के लिए श्रमिकों की उपलब्धता सुनिश्चित हुई

वैज्ञानिक क्रांति ⇒ इंग्लैण्ड में मशीनों से कपड़ा बुनाई
- 'स्पिनिंग जेनी' नामक चरखे का आविष्कार जिससे अधिक मात्रा में सूत काता जा सकता
- रिचर्ड आर्कराइट सूत कातने की मशीन का आविष्कार
- कारखानों का निर्माण

अन्य ⇒ जनसंख्या वृद्धि ने जहाँ माँग को बढ़ाया जिससे उत्पादन में वृद्धि
- वहीं श्रमिकों की आवश्यकता पूरी
- परिवहन क्षेत्र में नहरों, वाष्पचालित नौका आदि का आविष्कार हुआ
- इंग्लैण्ड में संचार क्रांति हो चुकी ग्राहम बेल ने टेलीफोन का का आविष्कार

Scanned with CamScanner

Page No.

Date

उपरोक्त परिस्थितियाँ यूरोप के अन्य देशों में विद्यमान नहीं थी, अन्य देशों में निरंकुश राजतंत्र विद्यमान था जिसने उद्योगों को कोई संरक्षण नहीं दिया किंतु इस औद्योगिक क्रांति ने संपूर्ण विश्व को औद्योगिकीकरण के लिए प्रेरित किया आगे चलकर, जर्मनी अमेरिका, जापान ने उद्योगों को प्राथमिकता दी वहीं भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। ब्रिटिश काल में सीमित मात्रा में उद्योगों का विकास किंतु स्वतंत्रता के पश्चात् इसने तीव्रता से गति पकड़ी व आज भी जारी है आवश्यकता है बस सतत विकास को ध्यान में रखकर औद्योगिकीकरण करने की।

Page No.
Date

Q3(c) गांधी जी के आंदो. व उनकी कार्य पद्धति की विवेचना कीजिये ?

गांधी जी द्वारा भारत की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण योगदान दिया जिसकी तुलना किसी के साथ करना ठीक नहीं होगा यही कारण है कि उन्हें 'राष्ट्रपिता' की संज्ञा दी जाती है व उनके आदर्शों को पूरे विश्व में याद किया जाता है उनकी अहिंसात्मक कार्यपद्धति के कारण 2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस के रूप में मनाते हैं अतः उनके कार्यों व आदर्शों को हमारे देश में आज भी याद किया जाता है अतः ऐसा प्रतीत होता कि वह हमारे बीच आज भी जिंदा है

गांधी जी द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध किये गये संघर्षों की बात करे तो इनके द्वारा विभिन्न आंदो. किये गये -

गांधी जी के आंदो.

चंपारण | असहयोग | सविनय अवज्ञा | व्यक्तिगत | भारत छोड़ो

चंपारण → गांधी जी द्वारा भारत में किया गया पहला विद्रोह जिसमें उन्होंने किसानों को तीन कठिया पद्धति से मुक्ति दिलाई

असहयोग आंदो. → 1920 में रोलेट एक्ट व खिलाफत आंदो. के विरोध में यह आंदो. शुरू किया
- 5 फरवरी 1922 चौरा-चौरी हत्याकांड के कारण यह आंदो. वापिस ले लिया
- अतः इसमें उन्होंने सरकार के प्रति असहयोग करने को कहा

सविनय अवज्ञा आंदो. → यह आंदो. 1930 से डांडी मार्च से प्रारंभ होता है
- 78 यात्रियों के साथ डांडी पहुंचकर नमक कानून तोड़ा

Scanned with CamScanner

- जनता को सरकार के असहयोग के साथ कर न अदायगी को कहा गया।
- सरकार दमन, गांधी इर्विन समझौता।

व्यक्तिगत सत्याग्रह :-

• व्यक्तिगत सत्याग्रह :- अगस्त प्रस्ताव 1940 में अस्वीकार कर व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया।
- प्रथम सत्याग्रही विनोबा भावे व द्वितीय जवाहर लाल नेहरू
- दिल्ली चलो आंदो के नाम से भी

भारत छोड़ो आंदो. :- 8 अगस्त 1942 को 'करो या मरो' का नारा।
- सरकार ने सभी नेताओं को गिरफ्तार
- जनता ने स्वयं अपना नेतृत्व किया

इस तरह गांधीजी द्वारा देश की स्वतंत्रता के लिए उपरोक्त आंदो. चलाए इन आंदो. के रूप में कार्यपद्धति को देखते तो इस प्रकार है

अहिंसा :- आंदो. अहिंसात्मक रूप से करने की प्रासंगिकता
(। अधिक से अधिक लोगों का जुड़ाव
(। रचनात्मक कार्यपद्धति में सरकार की छवि बदनाम

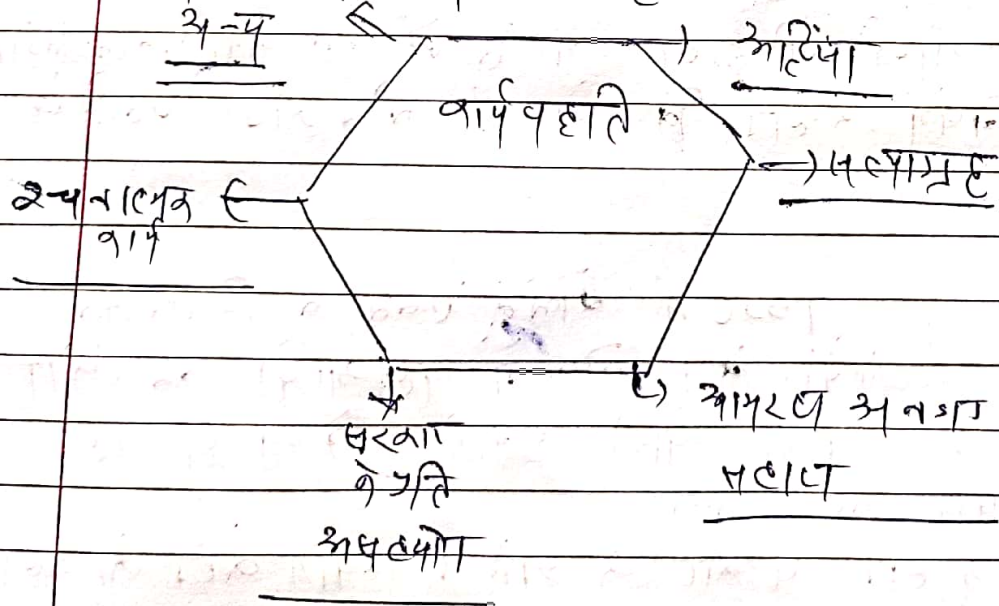

सत्याग्रह => सत्य के प्रति आग्रह, स्वयं को कष्ट देकर सामने वाले का हृदय परिवर्तन
↳ आंदो. में गांधी जी की यही कार्यपद्धति थी

आमरण अनशन का प्रयोग => इसके माध्यम से सरकार पर दबाव
↳ पूना पैक्ट, अहमदाबाद आंदो., व भारत छोड़ो आंदो. के समय
↳ सरकार पर दबाव बनता था

सरकार के प्रति असहयोग => आंदो. में सभी से यह कहना सरकारी स्कूलों, कालेजों, नौकरियों का त्याग
← कर अदा न करना
रचनात्मक कार्य => कुछ → विशेष -कुछ को विशेष की स्थिति में हरिजनोत्थान, दुआछूत मोड़ आदि कार्य

अतः इस तरह गांधी जी ने अहिंसात्मक रूप से सत्य के प्रयोग के साथ आंदो. को किया साथ ही देश को स्वतंत्रता के लक्ष्य तक पहुंचाया तथा स्वतंत्रता के पश्चात आज भी हम उनके विचारों व आदर्शों की प्रासंगिकता को महसूस कर सकते हैं क्योंकि वर्तमान में नक्सलवाद, आतंकवाद आदि समस्याओं का उनकी कार्यपद्धति के माध्यम से हल किया जा सकता है ताकि इन समस्याओं का शांतिपूर्ण ढंग से समाधान किया जा सके।